देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का छटाँ हुक्म, अपने पड़ोसी से वैसी ही मौहब्बत रखें जैसे अपने आपसे रखते हैं।

हज़रत ईसा अल-मसीह का छटाँ हुक्म, अपने पड़ोसी से वैसी ही मौहब्बत रखें जैसे अपने आपसे रखते हैं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरोकार चाहिए कि दूसरों से उसी तरह मोहब्बत करे जैसे वह अपने आप से करता है। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दो सबसे बड़े हुक्म ये हैं कि ख़ुदा से मोहब्बत करो और अपने पड़ोसी से मोहब्बत करो। आज की हमारी तालीम इंजील शरीफ़ से लूका 10:25–37 से है।

सबक को शुरू करने से पहले, हमारी पिछली तालीम को याद रखिए कि बनी-इसराईल और सामरी अलग-अलग तहज़ीबों से थे और अक्सर एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे। जो लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की बात सुन रहे थे, सब बनी-इसराईल से थे। इसलिए सुनने वालों के ख़याल में सामरी बुरे लोग समझे जाते थे।

आइये, अब हम सबक शुरू करते हैं

फिर एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को फँसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा, "उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकता हूँ?"

26ईसा ने उससे कहा, "शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढ़ता है?"

27आदमी ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है'।"

28ईसा ने कहा, "तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो ज़िंदा रहेगा।"

29लेकिन आलिम ने अपने आपको दुरुस्त साबित करने की ग़रज़ से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"

30ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़कर चले गए।

31इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर आगे निकल गया।

32लावी क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल गया।

33फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया।

34वह उसके पास गया और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की मज़ीद देख-भाल की।

35अगले दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा'।"

www.taleemulkalam.org

36फिर ईसा ने पूछा, "अब तेरा क्या ख़याल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम, लावी या सामरी?"

37आलिम ने जवाब दिया, "वह जिसने उस पर रहम किया।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने कहा, "बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें दो सबसे बड़े हुक्म सिखाए। पहला यह है: "अपने रब ख़ुदा से अपने पूरे दिल से, अपनी पूरी जान से, अपनी पूरी ताक़त से और अपने पूरे दिमाग़ से मोहब्बत करो।" दूसरा हुक्म यह है कि "अपने पड़ोसी से उसी तरह मोहब्बत करो जैसे तुम अपने आप से करते हो।" ये हमारी ईमान की सबसे बड़ी तालीमात हैं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें बताया कि हमारा पड़ोसी कौन है। उन्होंने एक वाक्या सुनाया एक बनी इसराईली आदमी के बारे में जिसे रास्ते में मार-पीट कर ज़ख़्मी कर दिया गया। उसकी सारी चीज़ें लूट ली गईं और उसे लहूलुहान हालत में सड़क पर छोड़ दिया गया। फिर एक काहिन उस रास्ते से गुज़रा और उसने उसे देखा।

यह काहिन हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से था और बनी इसराईल की इबादत की इमामत करता था। वह एक इज़्ज़तदार रूहानी रहनुमा था। मगर उसने उस आदमी की मदद नहीं की। फिर एक लावी आया और उसने भी उस आदमी को देखा। लावी, हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के बेटे लावी की औलाद में से होता था। लावी बैतुल मुक़द्दस में इबादतगाह की देखभाल करते थे। लेकिन इस लावी ने भी उस आदमी की मदद नहीं की। आख़िर में एक सामरी आदमी आया और उसने उसे देखा। सामरी बनी-इसराईल से अलग क़ौम का था। हक़ीक़त यह है कि बनी-इसराईल और सामरी एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे। फिर भी उस सामरी आदमी ने रास्ते में पड़े हुए आदमी की मदद की और उसके इलाज का ख़र्च भी उठाया।

इस क़िस्से को बयान करने के बाद, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने एक सवाल किया:
"इन तीनों में से, तुम्हारे ख़याल में उस आदमी का पड़ोसी कौन साबित हुआ जो डाकुओं के हाथों में पड़ गया था?"

शरीअत के आलिम ने जवाब दिया,
"वह जिसने उस पर रहम किया।"

तब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उससे कहा,
"जा और तू भी ऐसा ही कर।"

इस बात का बुनियादी नुक़्ता यह था कि जो लोग अलग-अलग क़ौमों से भी हों, वही हमारे पड़ोसी हैं; हमें उनसे भी उसी तरह मोहब्बत करनी चाहिए जैसे हम अपने आप से करते हैं। दूसरों से मोहब्बत करना, खुदावंद ईसा अल-मसीह के मानने वालों की सबसे अहम ज़िम्मेदारियों में से एक है।

यह बात बहुत ध्यान देने वाली है कि वह शरीअत का आलिम जो सबसे पहले ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पास आया, वह एक आलिम-ए-दीन था। वह तौरात शरीफ़ का बड़ा आलिम था, जो ख़ुदा ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल की थी। वह ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को आज़माने के इरादे से आया था। लिखा है कि "शरीअत का एक आलिम उठा ताकि उसे आज़माए।" बहुत से मज़हबी रहनुमा दूसरों को परखना यानी आज़माना चाहते हैं, मगर अपनी ज़िंदगी में तालीमात को लागू नहीं करते। यह भी लिखा है कि उस आलिम ने पूछा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?" इसमें कोई शक नहीं कि वह चाहता था कि उसे सिर्फ़ बनी-इसराईल के लोगों से ही मोहब्बत करनी पड़े। हुक्म सुनने के बाद भी वह अपनी ज़िम्मेदारी को कम करना चाहता था। ज़रा

www.taleemulislam.org

सोचिए, जब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने इस मिसाल के ज़रिये दिखाया कि सामरी भी उसका पड़ोसी है, तो उसे कितनी मायूसी हुई होगी!

बहुत से लोग, उस शरीअत के आलिम की तरह होते हैं। वे अपने पड़ोसियों से मोहब्बत करना नहीं चाहते। इस वाकिये में काहिन और लावी भी अपने पड़ोसी से मोहब्बत करने के लिए तैयार नहीं थे। बात यह है कि कुछ लोग बहुत ज़्यादा मज़हबी होते हैं, लेकिन उनमें मोहब्बत नहीं होती। ख़ुदा इस तरह के बर्ताव से ख़ुश नहीं होता। अगर हम वाक़ई ख़ुदा को मानते हैं, तो हम दूसरों से मोहब्बत करेंगे। इंजील शरीफ़ कहती है: "हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने पहले हमसे मुहब्बत रखी।" (1 यूहन्ना 4:19)।

इसलिए अगर कोई शख़्स मोहब्बत नहीं करता, तो इसका मतलब यह हो सकता है कि वह हक़ीक़त में ख़ुदा को नहीं मानता। हमें ऐसा शख़्स बनने से डरना चाहिए जो मज़हबी तो हो, लेकिन उसका दिल मोहब्बत से ख़ाली हो। इसके बजाय, हमें सामरी शख्स की मिसाल पर चलना चाहिए। उसने बे ग़र्ज़ होकर सड़क पर पड़े हुए आदमी से मोहब्बत की और उसे अपना पड़ोसी समझा। उसने अपनी ज़िंदगी रोक दी यानी वह रास्ते में रूका और उस आदमी को ज़रूरी इलाज के लिए ले गया। बेशक वह मसरूफ था, लेकिन फिर भी उसने अपने काम से वक़्त निकाल कर उस आदमी की मदद की। उसने उसके साथ वैसा ही सुलूक किया जैसा वह चाहता था कि लोग उसके साथ करें। उसने अपनी जेब से पैसे निकाल कर उस आदमी के तमाम ख़र्च अदा किए, जिससे वह कभी पहले मिला भी नहीं था। मुख़्तसर यह कि उसने अपने पड़ोसी से अपनी खुद की तरह मोहब्बत की। हमें भी जाकर यही करना चाहिए।

ख़ुदा चाहता है कि हम तमाम लोगों से मोहब्बत करें। इसकी शुरुआत हमें अपने क़रीबी लोगों से करनी चाहिए। शौहर, अपनी बीवी से मोहब्बत करें। उन्हें अज़ीज़ रखें और उनकी तरक़्क़ी के लिए जो कुछ कर सकते हो, करे। बीवी, अपने शौहर से मोहब्बत करें और अपने हर अमल और बात में उनका एहतराम करें। अपने आस-पास के लोगों के बारे में सोचो, ख़ास तौर पर अपने ख़ानदान और क़रीबी पड़ोसियों के बारे में। कौन ज़रूरत में है? आप उन्हें ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की मोहब्बत कैसे दिखा सकते हो?

कभी-कभी पड़ोसी से मोहब्बत करने का मतलब उसे खाना, कपड़े या इमदाद देना होता है। लेकिन अक्सर इसका मतलब हौसला अफ़ज़ाई की बातें कहना या किसी मुश्किल काम में उसकी मदद करना भी होता है। अपने पड़ोसियों से मोहब्बत करने का सबसे बुनियादी तरीक़ा यह है कि हम उनके लिए दुआ करें और ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का पैग़ाम उनको सुनायें। जब यह तालीम ख़त्म हो जाए, तो रुक कर दुआ करें। दुआ करे कि ख़ुदा आपके ख़ानदान और आपके पड़ोसियों को बरकत दे। दुआ करे और ख़ुदा से पूछें कि वह कौन-सा एक ख़ास शख़्स है जिससे वह चाहता है कि आप मोहब्बत करो। ख़ुदा से दुआ करो कि वह आपको रास्ता दिखाए कि आप उस शख़्स को अपनी मोहब्बत कैसे दिखा सकते हो। फिर जाऐं और वही करें जिसकी रहनुमाई ख़ुदा ने आपको दी है।

अब इसे अपनी ज़िंदगी की आदत बना लिजिए। अपने ख़ानदान और पड़ोसियों के लिए दुआ करना अपनी आदत बनाऐं, और ऐसे रास्ते तलाश करें जिनसे आप लोगों से खुद की तरह मोहब्बत कर सको और जैसे ख़ुदा ने आप से मोहब्बत की है।

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....

www.taleemulkalam.org